

चै शवषिमीरुमो नाहसावषिनीदश्या वापि नयो वना वृक्षो मिवावदुश्च स नराः स्वर्ध्वथ उर्व
 धीमूत्वा। कालाकुरु। धेवमाद्या गन्धर्वाणि। दत्तकस्य। अग्निर्वैष्णवस्तद्विद्वीरिणा शोधनं कृतम्।
 कपीठयानिहोलेना। जगत्तदास्तु नूतनात्। तदिह। मूल्याक वृत्तस्य। एष विष्णुः। उल्लङ्घनम्। जग
 या। एष वृत्तकान्। कथम्। पातकोऽनलः। अहिना। एषा वायुनत्वः। शिखावाना। पुष्पिणी। हि
 त्रय्यनामदुर्गम्। मरुता रुच्यवा रुतम्। सफा चिदम्। पुष्प। शिखरान्। विरगवत्। पुष्पिन्या
 रुमोर्वम्। वरुवा वरुवानलम्। वक्रम्। शोलेना। वक्रम्। निमिषाणि। जिह्वम्। त्रिंशत्।
 निकम्। र्त्तनायम्। र्त्तनम्। समम्। वरुनाम्। वरुनाम्। वरुनाम्। वरुनाम्। वरुनाम्।

[illegible][illegible]

पुनः कानि ॥ कथा अमावास्या त्रमाव ॥ दशसुख्यं नृसंगम ॥ सादृशं नृसिनीवाली सा
नष्टं नृकलाकूटं ॥ उग्रनागाग्रहाणां नृसंगम ॥ यस्तु विदो वधू विदुः ॥ यस्तु यथावत को द्वा वन्धुर्व
नडपादित ॥ ७ कथा अमावास्या वक्रो दिवा कननिगा कनो ॥ अस्तदधनिममो नृ काकाणि ॥ नृगण
ला ॥ नानुजिगा नृगण ककु मृदुला द्वा दला छिन्नी ॥ नृकुणि ॥ नृदला नृगण ॥ पदुदुदधयं वव ॥ पदो
पूर्वो पदो ॥ कु के श्रीमास नृगण व ॥ श्री श्रीमाया दिमा सोमो ॥ ददुदुदधयं नृगण ॥ अयतदग
तिनृद ॥ यदकिगा कस्य वत्स ॥ समनारि दिव काल ॥ विषवदिषू वंचनं ॥ यद्ययू का पोर्ण
सी ॥ पोर्णमास नृगण ॥ नानोस पोर्णमाया मा ॥ ध्रुवमेकादश ॥ पदो ॥ मार्गेश धर्म सदा मार्गेश

७२
आग्रहायणिक नृगण ॥ पोर्णमेकादश ॥ नयामाधधरा नृगण ॥ साकयस्य ॥ खानुनिक
साचे नृगणिकामध ॥ वगावमाधधरा नृगण ॥ ध्रुवकुं विह्वय ॥ आषाढ ॥ वगावमाधधरा नृगण ॥
वलिक ध्रुव ॥ सनृकस्य ध्रुव पद ॥ रादु रादु पद ॥ समाना ॥ साकयस्य ध्रुव ॥ ध्रुवमाधधरा ॥
साकयस्य ध्रुव ॥ वादु ला गोकार्लिक का ॥ कनन ॥ विनिगा छिन्नी ॥ वसकयस्य सनय ॥ सनरिग
अनुपक ॥ निदायड ध्रुव गमड ध्रुव ॥ सनृकय ॥ ध्रुवमाधधरा ॥ ध्रुवमाधधरा ॥ ध्रुवमाधधरा ॥
ध्रुवमाधधरा ॥ ध्रुवमाधधरा ॥ ध्रुवमाधधरा ॥ ध्रुवमाधधरा ॥ ध्रुवमाधधरा ॥ ध्रुवमाधधरा ॥
ध्रुवमाधधरा ॥ ध्रुवमाधधरा ॥ ध्रुवमाधधरा ॥ ध्रुवमाधधरा ॥ ध्रुवमाधधरा ॥ ध्रुवमाधधरा ॥

[illegible][illegible]

१५

99

[illegible]

अवदानः शिवाजीना, वलकाधवलार्हिनः॥ दनिः॥ पापुनः॥ पां॥ द, ग्रीष्मत्या इन्द्रभूतनः॥ कश्चुनीला
 शिवधाम, कालधामलभवकाः॥ योनाजीनादनिः॥ दारुः॥ पालाः॥ दनिमादनिने॥ लाहिनामाद
 मानकाः॥ लाहैः॥ काकनदकविः॥ अश्वकनागलनः॥ लाहैनककुवाटलः॥ ध्यावेः॥ स्यात्कपिः॥ ध
 मु, धामलोककुबुलादिना॥ कजानः॥ कपिलः॥ पिने, पिगलोकदुर्पिगलो॥ विरुकिर्मात्रकलोषः॥ व
 लेनाधकनेन॥ गुणीयुकादयः॥ पू॥ सि॥ पुलिलि॥ आमुनदनि॥ निधीवर्गः॥ ॥ वाप्तीडुलान
 गीराभा, गीर्वाणासनरानी॥ आरुहं नडकिर्लपिनं॥ लपिनं ववनं ववनः॥ अयमं॥ पापः॥ द
 ॥ स्या॥ काकु॥ दमुवावकः॥ निधूवकवथावाका॥ क्रियावाकानकाविनी॥ पुनिः॥ पुनीवदश

न्यायं मुनी धर्मं मुनिद्विधिः ॥ श्रुत्या नृक्षामय इषी, निवदा नृयमुयी ॥ शिकृत्वादिधुतंगं, माकं
न पुनो वीसमी ॥ निहासः पुनारुहः मृदाकाद्यामुयः ॥ खनः ॥ श्रुती क्रिकीद पुनीनी, तर्क विद्या
र्थः ॥ मुयाः ॥ श्रुत्यापि कोमलं जायते ॥ पुनर्लप्य अलं कर्मा ॥ पुनर्वध कल्पना कथा, पुनर्विनाय
दलिका ॥ मुनि धर्मं संहिता, समाह्वयि मुनि ग्रन्थः ॥ समस्या तु समासा भाः ॥ किंवदन्ती कर्तुं न शक्य
॥ वारुण्य वृत्ति वृत्तान्त, उदकः ॥ स्यादधा दयः ॥ श्रुत्या कः अलिखनं च, नाम धय च नाम व
दुनिना कावणा काने, संहतिर्वहति ॥ कृता विवादा व्यवहानः ॥ स्या, दृष्ट्या स मुवा द्युत्वं ॥ उवा
द्या न उदाहानः ॥ येनेनेन पथः ॥ प्रमान् ॥ पुनः न्यायः ॥ पुनः वा, पुनिवाका कर्तुं न संम ॥ मिथ

[illegible]

धीरे दाम्बुजि कुरु न॥ उद्यती वाग कल्याणी स्यात्कल्या इष्टुः कामिका । अथ धर्म प्रवेशात् । संगत
 हृदये गते ॥ निवेनं यत्र वंशम्य सलीलं नृनं प्रिया सख्य धर्म कलकिं च । यत्र सवये नादं
 । लम्बवर्ध पदं ग्रस्तं । निवेनं च निगादिनं । अं वृकं सनिधी वसव इत्यादयः । अनकं नम
 वाचीया दादं इष्टुः । अथ निवेनं सविनायकं । विनयं च नृनं ववः ॥ अलीनं धर्मं सख्य
 गमू निवेनं दामि । धर्मिना दनिनदं । निवेनं नवस्वना ॥ स्वानि द्या यनिडादं । नादनिस्व
 ननिस्वना ॥ अनवा नावर्तनाव विनावा अथ सर्मनः ॥ स्वनिगं ववु ववर्त्तनां । स्वपला नां दुर्ग
 जिने । निगा ॥ निक्क ॥ कानः ॥ कलः ॥ कलनमित्यादि ॥ वीलयाः ॥ कलिगं पादः ॥ यका ॥ यकलाद

[illegible]

बालः स्यात्ककुरुमुपशवकः॥ कालवकमु काथाया उयनाका निर्वधनी वाद्यवपु रुदागुम
 नू मर्दुडिडि मर्मना॥ मर्दलः पणवाद्यव नर्क कालासिकासभा विल विनंदन मर्थ नत्वमी
 धाद्यने जमान॥ गालः कालजिघासानलयः साम्यमथापुयी। नउवनननेनाद्यं लास्यन्दत्यव
 नर्कन॥ मीय्युकि केन सगीत वाद्यनाद्यमिदं गयी। उर्कं धाकुरुकं धा उर्कं धा प्रतिनर्ककः॥
 कुवमधानीयून् धा नाधाको गलिकार्कका॥ रुमिनी पतिना वृक्षा रावा विद्यानथा वृकः॥ जनः
 कायवनाजमु कमानोरुहं दानकः॥ नकारु दानकादव रुक्मकारुहं दानिका। दवी कनालिध
 काया मितनासु वरुहिनी॥ अ्वमधमव(धा)को नाऊ धालमु नापुयः॥ अम्नामानाधवाल

१४

स्या चासनाम्यमुमात्रिषः॥ अत्रिकारुमिनी धका निवृत्तिर्वह(स)म॥ रुकुलं कुरुलाकारं नी
 वं धमी सत्वापुनि। अंगदात्री गविक्रमा यौक कारिनयोसमो॥ निर्वहर्त्तं गयत्वा स्या द्विष्टि यो नि
 कलाविके। ७८ मानवीनकनूपा कुतहास्यरुयानका॥ वीरुत्सप्रोडवनसाः ७८ मान ७८ विनूक
 लः॥ उत्साहवर्द्धनावीनः कावृषं कनूपा दृष्टा। रुपादयानूकं पाया दनूका ७८ यथा ७८ रुसे
 ॥ हासा हास्यवती रुसी विरुमं विविदं दयं॥ विलया इतसा धर्म्य विरुमयथा रुववी दानूपा
 सायलं लीय्य धानं लीमं रुयानकं॥ रुयं कने पुनिरुयं मोदं रुग्रममी विवृ वडुदं दलगा
 शो कानिरीः साधसं रुयं॥ विकाना मानशासावा नूकावासाववाधकः॥ गवो रुमाना रुकावाः

मानधिरुसमन्तनिः॥ अनादनः पत्रितवः पत्रितवलिनेकिया॥ नीटावमाननावका अवरु
 लामरुकाणी मन्दाकैडा मुपावडा लकासापयपान्यनः॥ कान्तिहिनिकाहित्याहु पत्रितविव
 यरुहो अकान्तिनीया स्याहु दावाभापागु (भासपि) विनेत्रिना धा कंधा मन्दा (भाकोडु) हु
 क्रिया॥ पश्चात्तयाननापध्व विपुनीसानरुस्यपि कायकाधामसर्वभाष पुनिधोवटकु (धो
 कुथो) हुवोडुवनिमणील मन्दादधिरुविजुमः प्रमानाधियनारुहं पुमन्तकाधेदाहदं॥
 काकाकैस्यरुहाह गं कालिन्सा मना नथः॥ कामाहिला परुसध्व संमहालालसादधः॥ उ
 दाधिनीधर्मविका पंसाधिसात्रसीयथा॥ स्यात्तुकारुनिनाथान मर्क (भा) कलिकसम।

16

उलाहाधवस्यवः स्यात्तुवीर्यमनिः किराक॥ कपटागुवाजदंका पधयध्व प्रकैगव। कस
 निनिर्दुनिः ॥ १५॥ पुमादानवधानना॥ कोरुहलं कोडुकं व कडुकं व कुरुहलं मुनीर्णविलास
 विडाक विजुमाललिनेमथा। रुलालीलसमीहावाः क्रियाः ॥ १६॥ मानरावजाः उधकलियनीहाः
 साः कोठालीलावनमर्तव॥ पाजापद (भा) लस्यं व कीडाखलावकुरुदं नी। मन्मनिदायः ॥ १७॥
 स्यात्तुलथानरुवदना॥ अवरुहिका कानरुकिः समोसं व गसं उमी स्यादाहुनिनकैदासः
 सात्यासः समनाकस्थितं॥ मध्यामः स्याद्विदुसिनं नामांवातामरुवर्णं। कंदिनेनेदिनेकुरुदं दि
 रुकुडिषुदंरुणी॥ विपुलं वाविसंवाधा त्रिगर्णस्वलनेसमासातिडागयनं स्यापः ॥ १८॥ संप्रः सं व

॥ गुरुपिण्डो जमील उकटि उकटि उकटि ॥ १ ॥ अद्विष्टादशोभ्यन्ते सीसिद्विचक्री
 निमोः स्वर्गवत्सवध निमग्नेऽथ वेयथ ॥ कयाधक्रीडद्वर्ध सदुर्ध्ववडसव ॥ २ ॥
 स्वर्गवर्ग ॥ ॥ अथ दुवनमागल बलिसद्यनसागली नागलाकाधकूलं धुमिनं वितनं
 विलं किद्विनिर्वाधनं नार्क नं ॥ ३ ॥ अथ वयासुमि ॥ नार्क वयोद्वि ॥ ४ ॥ सनं धुमिनं विम ॥ ५ ॥
 कात्राद्विर्वाधनं नमिर्वाधनं विमिर्वाधनं ॥ ६ ॥ नार्क गार्ध्वनं काधवमनं नम ॥ ७ ॥ विमर्कनं नमर्न
 गा ॥ ८ ॥ काद्ववयासुमी ॥ ९ ॥ धानकावासुकिमु सव्यनाकाधगात्रा ॥ निलिस्त्रादजगन
 ॥ यूर्वाहसं लो ॥ अलगर्दकलद्याल ॥ समोनाजिलदूदो ॥ अलगर्दकलद्याल ॥ समोना

१३

जिलदूदो मालधानामादुलादि निर्मूकामूककवक ॥ सव्योऽयदाकुरुजग ॥ कुर्जगादि कुर्ज
 नम ॥ अथ विधाविषधन ॥ अथ जाल ॥ सनीरुय ॥ कडलीमूदपात्र ॥ वाकाकादन ॥ दली ॥ दली
 कनादीयदका दद ॥ काविल ॥ यथ ॥ उन्नग ॥ यन्न ॥ गा ॥ गा ॥ जिक्कग ॥ यवेना ॥ १ ॥ ॥ जिक्का रुर्न वि
 वाह्यदि ॥ रुदाया ॥ उरु ॥ २ ॥ ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥
 कालकटहलोलाला ॥ सात्राहिक ॥ १ ॥ ॥ २ ॥ ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥
 दाअमीनव ॥ विषवै माजगुलिका ॥ यालया ॥ कादिउठिक ॥ १ ॥ ॥ २ ॥ ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥
 नानकमुनेनका निनथा ॥ अग्नेनि ॥ १ ॥ ॥ २ ॥ ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥

कालसूत्रं व. स्याद्यः सत्तामु नानकाः। उगावेन नलासि ४४. स्यादलम्बः मुनिर्जनिः। विदिनाहः ४४ कान
 लाहु. योगनामी ववदना। यीजावाधः यथा ४४. त. मानसं यमिसुनिर्जः। स्यात्कर्मककु मारो लं. निश्चयः
 रुच्यमानियत ॥ ४४. निननकवर्गः ॥ ॥ समुद्राद्विप्रकृपानः. पोनावानः सनित्यानिः। उदवानुदधि
 ४४. शिखः सनखोनसागवा ४४. व. त्रत्ताकवा ४४. जलनिधि. यदि ४४. यमिनयां यमिः। तस्य पुरुषः ४४. क्रीडा
 दा. लवणधरुधापन. आपः ४४. मुनिवा ४४. नि. सलिलं कमलं ४४. लं ॥ ययः ४४. कीलालममनं. जीवनं
 कुवनेवनी। कर्तव्यमूदकं पाथः. पूकनं सर्वमासुतं। अं. कर्णसायं पानीय. नीनक्रीडामुसं वनी।
 मयपृष्ठा यननस. छिद्रद्वयस्य मयः। रुद्रकनं गडुमिच्छ. छिद्रो वीचित्राधामिच्छ ॥ मरुत्तः

११

लालकलालो. स्यादावर्कः रुसजुमः। यमनिविन्दुवषणाः. यमीधाविपुषः ४४. छियः। वकालिपुटरुद
 ४४. रुसाधुजलनिर्जसाः। कूलनाधधमीनं व. पुमीनं वगटं छिद्रं ॥ पानीवानपना ४४. वी. नीनया
 र्गनदकनं। दीपाष्टीयामकनीयं. यदकनं विलसुटं ॥ मायातिर्गनस्य लिने. शेकटं सिकनामयी। नि
 सदनमुज्जवालः. पैकाकुः ४४. दकदमो ॥ ऊलाकुसाः ४४. पनीवाकाः. कृपकासुविदानकाः। नाव्यं
 तिलिर्गनो नाथे. छिया नो रुवलिस्त्रिः। उठयं तु पवः ४४. कालः. आमावः ४४. वगं स्त्रः ४४. आगवस्त्रः
 पथं स्या. दुलीकाकासुवादिनी। सीयाति कः ४४. पातवलि. कर्णध्वानमुनाविकः ४४. नियासकाः ४४. पात
 वाकाः. कृपकासु ४४. वरुकाः। नोकाद ४४. कृपनी स्या. दविर्गकं नियासः ४४. अजिः ४४. कीदृक् दालः

सक पाठं दुशवने। यान पाठं दुया नात्रि रुव सा मृदियं विषा सा मृदिका मनु ध्यात्रि जाना दो नो
 स मृदिका॥ क्रा वृद्ध ना वं ना वा र्द्ध ना नो कनि न छि वृ। विषा मा भस्य सेना कः कल वान कश्रु विल
 निर्म गही नै गं रान मरु नाने न दिव यय ध। अ गध म ग ल र्णा के व र्द्ध दा स धी व नो। अना यः पू सि जाल
 स्या कन स्तु र्ग य विगु क। म स्तु धनी क व लो स्या दृ डि र्ग म स्तु व धने॥ दध न मा म धा म स्तु। सी ना वे
 सा नि ए। पु उ। वि सा नः कली वा ध गठ कः कला र्क कः। स द्रु य द द्रु या र्णी न डलू यी सि पु कः
 समो। न ल सी न छि लि वि मः। या यो उ। रु ली द्रु या। रु डा उ म स्तु र्ग यो नः धा ना धा न मा ध म मा। प्राः
 दि ना म रु नः। ला ना जा वः। कल सि मि॥ नि नि वि नि ला द य धा ध या र्दी सि जल रु न वः। ग रु दा

१६

नीखनखा३

सि पु मा प्रा डं। क वा म क ना दा यः॥ स्या कली नः क र्क ट कः कर्म कम ० क रु धो। ग्रा हा व ना हा न ग रु
 क र्णी ना ध म र्णी ल ना॥ गं दू य दः किं व लू का नि रु का। म धि का म स। व क पा रु रु लो का र्था। छि यो रु
 मि रु लो क सः॥ म का रु टः छि यो रु किः। र्ग वः स्या क म न रि थो। रु ड र्ग र्वाः। म्ब का उ ल रु कः
 यः। रु क र्म रु क व र्वा रु। भ लू न य व द द्रु ना। शिली र्ग दू य दी रु की व र्वा रु। क न र्दी इ लि। म रु न
 स पि या र्ग मी दू र्ग मा दी र्वा को मि का। उ ल रु था रु ला धा ना रु रु मा ध रु ला रु दः॥ ग्रा हा व रु नि
 धा न र्स्या द र्वा न द व र्वा न क॥ प द्मा क न रु अ। म रु। का सा नः स न सी स नः। व र्णी नः प लू र्वा
 ल स न र्वा यो रु दी र्वा क॥ व र्ग रु य नि र्वा धा न रु रु र्वा य रु धा न र्वा। स्या दो ल वा ल मा वा ल मा वा

पांथनदीसत्रिग ॥ नर्मणिनीलोवलिनी, नटिनीकुदिनीधनी ॥ प्रागस्वगीदीपवगी, प्रवन्नीनिम्नगः
यगा। नर्मगविष्णुपेदीऊऊ, ननयासूननिम्नग। रानीनधात्रियथगा, जिष्णुगानीकासूनयि। कालिदी
स्वय्यननया, येसूननाधमेनस्वमा। नेवाहुनर्मदाशामा, रुवाभकलकन्यका। कनगीयासदानीना
वाहुदाशोनवादिनी। शिरुदुहुमीनदुःखा, द्विपाभाहुपिवाट्टिरीया। ॥ १॥ ॥ ॥ दिनधवाहुः ॥ १॥ ॥ ॥
ल्याल्याकनिमासत्रिग ॥ ननोवगीवर्गवगी, वन्दुगामासूनस्वगी ॥ कावनीसत्रिगान्याध, सूरुदः
सिंधूसंगमः ॥ दधोः ॥ पुणालीपयसः ॥ पदव्यात्रिभूरुनो। दविकायां ॥ नव्याथः ॥ रुवदाविकः
सानवो। शीर्गविकंडुकान्, रुवकंनकसंभकं। स्यादुत्पलंकवलथ, सधनीलासूजमव ॥ १॥

[illegible]

[illegible][illegible]

नमिः पद्मिः पुष्पा, वर्त्मन्यकपदीनिव। अग्नियंथाः सूर्यंथाः, सत्यंथाः अश्विर्नधुनि॥ अथाः दूतः
अविषयः कदम्बाकायः शमाः॥ अयंथाः स्वयंभुक्तः, अगटकवदुष्यः अजाकनेदूतः अथाः
काकनावर्त्मदूर्गमं॥ गद्युनिः शुक्राः अयं, नल्यः किष्कवदुः ॥ अग्नयंथाः सूर्यंथाः सत्यंथाः अश्विर्नधुनि॥
निकर्त॥ अग्निरुमिवर्गः॥ ॥ अः शुक्राः पुनीनगथावा, परुर्नयूटकदनी। स्कानीयनिगमानु
यमूलनगनात्पूनी॥ नकाखानगर्नवः॥ अथाः अजनासमाः अथाः अजनासुनिमयायां विषाल
॥ अथाः अवीधिका। अथाः अनीलीविधित्वा, अथाः अविषमक्रियां॥ अथाः अवीधिका। अथाः अनीलीविधित्वा, अथाः अविषमक्रियां॥
अथाः अनीलीविधित्वा, अथाः अविषमक्रियां॥ अथाः अनीलीविधित्वा, अथाः अविषमक्रियां॥

नै॥ निष्ठाकवत्सासदनं रुवनामानमदिनी॥ गृहाः ४ पृथिवीरुम्भ्यन्ति कार्यनिलयालयाः ॥ वासः
कृष्णद्वयाः ४ भालासकर्मयवनं विदं॥ वहुः ४ भालं मूनीनां दुःखं लोभः ४ कान्तिर्या॥ वैद्यसायनं
दुर्लभं वाजिः ४ भालासुसंदूना॥ आवधनं लिलिभालासुपापानीयभालिका॥ म० कृष्णदिनिलया
गङ्गाकुसुमदिवागृहं॥ गर्भगर्भवासागृहं॥ मन्त्रिष्वसुक्तिकागृहं॥ वानायनं गवाक्षः ४ स्यात्तन्तुधा
प्रीतिनाथः ४ यः॥ हर्म्यादिधनिना वासः॥ सासाधवत्तुङ्गा॥ शोधः ४ मृगमदनं मृगकार्याप
कानिका॥ स्त्रिकः ४ सर्वगः ४ रुद्रा नैयावत्तुङ्गापिवा विरुद्धकः ४ पुरुषादि रुद्रकोः ४ नराय
नां॥ मृगमर्भत्तुङ्गासकः॥ पनस्यादवमाधनी॥ शुवान्धवमाधः ४ स्याददः ४ क्रोनमक्रियाप

पाण्युयलालिदा, वहिदीनयकायक। गृहावग्रहणीदह, लीगलधरुत्तनाजिनाअधकादानूलि
 लिला, नासादानूपनिस्किनी। एकनमकदानेया, एकदानेगुपककी। वलीकनीवुपटल, पाक
 थपटलैकदि॥ (ग) पावनीउवहली, कादनवकादानूलि। कपाटपालिकायांडु, विटकीयनयसकी
 ॥ सुदादानेपनीदानः, स्यादितदिमुधदिका। मान(ग) सुवहिदीनै, पूनदानेड(ग) पूर्ण॥ कूटेय
 दानियूदसि, नसकसिन्नथरि॥ कपाटमननेडुल्य, नदिकैसीगैलनना। आनाहलीस्यासाया
 न, निःसालिधिनारुणी॥ सम्मर्जनी॥ धनीस्या, लंकनावकनसया॥ क्रियमूर्त्तनिःसनली, सीनिव
 (ग) निकर्षणी॥ समीसीवसथः ग्रामो, वससुवामुनरियी। ग्रामाकडयलीस्या, सुमसीमकि

२२

यामरु॥ द्यामअलीनयलीस्यास्यक॥ १॥ वनालय॥ ॥ निपूनवर्ग॥ ॥ मदी। धुगिरवनिस्कार
 दकायधिनयवताः अडिगारुगिनिग्रवा, वल(ग) ललिलोच्चया॥ लाकालाकधुववाल, ठिकटकि
 ककुरासो॥ अरुमुवनमस्कार, इदयः पूर्वपर्वगः। हिमकानिष(ध) विंधी, माल्यवान्यानियग
 क॥ गैवमादनमथव, रुमकटादधानगः॥ पासाण्यरुनग्रावा, पलाः सानः लिलादयग। क
 ठाकु(ग) निषर्गैर्ग, पयानल्लनदारुडु॥ कटकाशुनिगम्माडः स्रः यरुः सानूनकिथो। डसः य
 सवलीवानि, पुवाहनिर्जनामवः। दनी, दुर्कदनावाकु, दवरागविलगुला॥ गदनेगडु(ग) लोमु
 यगाः सुलायलीनिनः। त्वनिःठियामाकावस्या, स्यादाः पलकयवताः॥ उयसकाडनानोसे

रुमि नूधमधिरु का॥ धुर्मनः शिनायड (नेत्रिकुविषयगशानिकुं ऊकुं गोवा क्रीव लमादिपि
 हिमादमा ~~रुमि~~ लवर्गः॥ ॥ अग्नयनध्वविपिनं गहनैकाननं वने। मदावधमवधनी नः
 हा नामा मुनि कदा॥ अनामः स्यादुपवर्नं कृतिमं वनमवयन। अमात्यगलिका गहा यवन
 वक्रवाटिका॥ यमाना की उडयानं नारुः साधनं वने। स्नादमदं वयमद वनमनं यथाविनं
 । वीधालिना वरिः पकिः । नीलत्वा मुना ऊयः॥ वन्यावनसमूहस्या दंकुनालिनवादिदिवा
 क्रासही नूहः॥ लवी विठवी वाद पसुनः॥ अनाकदः क०१॥ लः पलाशी दुडमागमा॥ वीनस्य
 राः रुलेः यथा रुनयथा दनस्य निः डावधिः रुलका ना स्यादवधः रुलग्रहिः वीधः रु

23

ला इव कशी च रुलवानरुलिनः रुली । पुरु सोरु लर्म रुल या काय वि कव रुटा॥ रुल (मविः
 कसिने स्यनवधः दय छिपू॥ का लूवाना कुवः॥ क रुस्वः शाखा निरुः रुपः॥ अयु की उरु वयु लोः
 वली दुवगनिलता॥ लमायुगानिनी वीन रुलि नूल पः स्या पि। नगाशा नारु डकुय डसधः
 कुयधसः॥ अयु। युका ७१ स्कंधः स्या नूला द्वा स्वावधः रुना॥ समशा खालनं स्कंध गाल शिरा ऊ
 रुः॥ शाखा शिरा वना रुः स्या नूला चार्ग गालता॥ शिवाग्रं शिखरं वाना नूलवधः पिनामकः॥ सा
 नामका समोत्तु क्री वल्क वल्कल मनुया। कादं दार्चिभनं स्वध रुधमधः समिन्नु या। निरु रुः
 काटवं वाना वसु निर्मज्जनिः रुयु॥ यरु पलाणी कदनं दलं पः रुदः यमाना पल वा उी कि सः

स ये विस्मानाविटपात्रिया। आमरुललादः स्या कृष्णवानमरुतिवृ॥ कात्रकाजालकं कात्रं कलि
काकात्रकः प्रमाना स्या कृष्णकमुकवकः कद्रुलामकलात्रिया। त्रियः समनमः प्रषी पुस्तनः
कसमसम। सकनं दः प्रषानमः प्रनागः समना वजः॥ दिदीनं यमदसर्वं रुनीवनकादयमि
यी। अथक्तेवैलवद्राकनेव। अथेगुदं रुल॥ वारुनं वरुलजीवा जम्बुः फीजम्बुजाम्बुवम। प्रषाज २४
गपुरुतयः, स्वलिगावीरुयः रुला। विदाम्याया मुमूलषि, प्रषाकावपिपाटला॥ वाविडुमथल
दलः प्रियलः कंजनागनः॥ अथक्तेथकपिक्कम्, दीरुक्तेयादिममथा। तस्मिन्धधिरुलः प्रषाः
रुलदन्तं भवपि॥ उदुम्बनं रुल। यम्बी। गारुमदुम्बकः। कादिदानवमनिकः, कद्रुलायुगप

उकः। सकपः। विष्मालयकः। वदीविषमकदः॥ अत्रग्वधनाजवृकः। म्याकमडुनीगुलाः।
अत्रवनयाधियातः, रुगमालेरुवर्धकाः॥ सूर्यजीवदकः॥ १० जम्बुजम्बीनं रुलाः। वन। वन
लः। उ, लिक्कः। कः। कमानकः। प्रना। गपुनूवर्धुगः। कसनादववसरु॥ पाविरुडनिम्बन
मन्दातः। पाविजानकः॥ निनि। सूर्यदनामनमधुदुवनिमूककः। वंरुलषिठकृत्वाध, द्योपीनन
कपीनना॥ अत्रानकमधुकेडु, गुठप्रषामधुदुमो। वानयुक्तमधुकीलो, जलजम्बुमधुलकः॥
पीलो गुठरुलः। प्रुसी, तस्मिन्धुनिनिर्लरुव॥ अत्राउकप्यनालोद्या, वंका। उदुनिकात्रकः। यलाः
। किं। उकः। यः। वानयागाधवनम। तथाउप्रषाविदल, गानवानीनवंरुलाः॥ द्योपनिषाधवि

दलो नादयी वां वृषत स॥ गारुड नहि धरनी कू गंध का क्रीव माव का॥ न का सो मधु लिग्र ४ स्या दविष्
४ रुनिल ४ समो॥ विष्णु भा लिल्य लिल्यो माल नली रुला वपि॥ प्र का ऊठी प क्रीटी स्यो न्य (प्र) धा व दू
पा दट ४॥ गाल व ४ भा व नाला ध, लिनी ठ लिखे मा क्रीतो॥ अ म ध्य भा न सा ला सो सरु का ना नि सो न रु
४ क काल मल के क्रीव को णि का गु मूल ४ प न ४॥ गाल ४ अ म्मी त क णी ने ४ उ दाला व दू वान क ४॥ न
जा द नू मिया ल ४ स्या सन क डू डू नू ४ प ठ ४॥ ग रानी स च्च भा रु डा का म नी म धू य लि का णी प ष्ठी रु
दु प ष्ठी व का म य ष्ठी य ध च था ४ क क धू च्च द नी कालि ४ काल क वल रुनिल सो वी न व द न धा य
प ध स्या स्वा डू क ४ क ४ वि क क न ४ स वा व का गु थिला या द्यु या द पि ४ न वा व न ना ग नी (ग) ना द यी

लंतिऊं वृका॥ निडु क१ रु० क१ काल१ र्क१ ध१ सि नि सा न क॥ का क१ रु१ कल क१ का क१ पी लू क१ का क१
 निडु क॥ गाली१ मा ट ला दी टा पाठ लि भा क मु क को॥ तिल क१ रु न क१ धी मा न श भो पि वृ ल मा व को॥
 श्री य ध्रि का क मु दिको क रु १ के ट यो क ट रु लो॥ क मु द१ प ट्टि का र्वा १ र्वा त्य दी ला का य सो द न १ नृ द
 दु दू ष १ क मु का व न्न ॥ धा व क दान व ॥ रु ल व नी प पिय क क र्द वा मु रु नि प्रि थ ॥ वी न वृ का नू क ॥
 गान्ति मू र्खी रु सान का डि मू ॥ ग र्द र्क १ क द नाल क पी न न स र्वा र्थ का १ पु रु ध्व नि कि डी वि वा लि का
 थ पी न सालं को स र्क का स न वं थ क पू षा प्रिय क जी व का १ साल दु स र्क क र्वा र्थ क र्क का १ स र्वा
 र्थ व न १ ॥ न दी स र्क जी वी न ग वृ निडु दु १ क क रु र्क न १ ना जा द न रु ला ध क का नि का या म थ द थ ॥

ॐ शुदीनायसगनू, कर्मवर्मि मृदुत्वो। पिच्छि लापूवलाभाय, छिनायू॥ लमलि द्वा॥ पिः
 कातु॥ लमलीवक्ष, नावन॥ कठ॥ लमलि॥ विनविज्ञानकमाल॥ कनजधकनैजक॥ यकीर्ण
 ॥ पुनिकनज॥ पुनिक॥ कलिकानक॥ कनैजकदा॥ यजु॥ था, मर्क॥ अंगानवसनी॥ नादिनादि
 नक॥ श्रीरु॥ गुदादिमयूषक॥ नायशीवालननय॥ स्वदिनादनधवन॥ अत्रिमदाविद्वः
 दिन, कदन॥ रददिनरिम॥ सामवे॥ कीयथयायु, पूरुनीधर्वदुलको॥ ७ नैग्रउवकधे, न
 वृकधिरुकधस॥ वृव॥ र्पवायुलामपु, वृदमानयठवका॥ अल्लामपीमपीन॥ र्म्या, कमी
 सकुरुलालिवा॥ पिपुनकासनवक॥ यसन॥ कनरुठक॥ मल्यधेमदन॥ कपाविन॥ यानि

२३

रुडक॥ रुडकानूडु किलिन पीनदानूवदानूव॥ पुनिकावैवसकस्य, र्दवदानूधधदया॥ या
 ठलि॥ पाठलामाया, कावकालीरुलनूला॥ कश्रुवकोकवेनाकी, धामपुमदिलादया॥ लनाभाव
 दितीगुदा, यियगु॥ रुलिनीरुली॥ विवक्षनानैधरुली, कानैरायियकधसा॥ मपुकपधूयग
 र्क, नठकद्वेगद्वेदका॥ स्याताकपुकनासक, दीर्घवृककूटनटा॥ ॥ नकधामलोनिध्या, रुला
 लामलकीनिधू॥ अमनाववयकाव, जिलिंगदु विरीनक॥ अकश्रुप॥ कर्मरुला, रुमवास॥
 कलिदुम॥ अरुयात्रयथापथा, वयकायुननामता॥ रुनीनकीरुमवनी, वनकी॥ ययसीहि
 वा॥ पीमदू॥ सनल॥ पुनिकावैवधधमालाल॥ कर्षिकान॥ पविद्या॥ धा, लक्यालिकथाउद

४॥ यनस४कंठकिरुला, निवृलाचुज० ऊलशकाकाइम्वनिकारुनु, मलपूऊचनरुला। अविह
४सचैभारुड, हिंयुनिश्यासमालका॥ येवमदधनिवथ, पिछिलागुनशिंषाया। कपिलारुसमगकोसालि
नीषसुकपीनन॥ रुंठिलायथवाभययथैपकाहुमयूषक॥ ७नस्यकलिकागैध, रुलीस्यादधक
सन॥ वकूलावैशला॥ ८क, सभोकनकदाडिमो। वांयय४कसमानाग, क०न४को३ननाकय
४। ऊयाऊयकीनकात्री, नादयीवैऊयनिका। धीपध्रमनिर्मै४स्या, कलिकागलिकानिका। ऊ
याथक०ऊ४का, वसकागिविमलिका। ७नस्येवकलीगनु, यवरुदयवैरुली॥ कव्वपाकरु
लाविग्न, सूषणी४कनमदक। कालस्कंधरुमालस्या, लापिक्राप्यथसिधक॥ सिंधूवालनुसनि

श्री निर्गुणालिकरूपि। वलीखनागनीदव, नाशजीसुगन्धयपि। श्रीरुक्मिणीउरुनूठी, रुणधूनी
उमसिका॥ रूपदीपगरीनृध, सेवास्वाभावनादवा॥ लल्लालिकाउमवला, निर्गुणनीलिकावः
सा। शिना। धनरनसा, रुगवधधमागधी। गलिकायुधिकात्रस्ता, सायीनादमयुषिका। अग्निमू
क४यू, क४स्या, दोशकीमाधवीलगा॥ समनामालनीजाति४, सकलानवमालिका। मायकंदनक
कडु, वंधूकाबंधूजीवक४॥ शलाकूमाननीनगलि, वृक्षानमुमदासदा। नग। लालकनूवक, रु
उपीनकनूटक४नीला। मिणीदयावोला, दासीचारुगलधरा॥ सेनीपकडुमिणीया, रुक्मिन्
कनवकावृणापीनाकनू४का। मिणी, गस्मिन्सदचनीदया४। दादयूष्यंजवायूष्यं, वडायूष्यंनिः

लस्य यम। उगी हास गय। तं उ ग रु य मा न का श क न वी न क नी न डु क क न र्ग धि ला व र्गो ड
म रु ४ कि ने बा धू को धू ल न ४ क न का द य ४ मा ड ला म द न धा स र ल मा ड ल पू र क ४ र ल पू र
वी उ य न नू व को मा ड ल र्ग क ॥ स मी न का म नू व क ४ पु रू प रू ४ रू लि च क ४ र्ज वी ना य थ य ४
श क र्पि उ न क ४ न को ॥ ति न र्ज का रु पा ण ड वि रु का व द्धि र्ज क ४ अ र्ज क य मू का रू न ग ल नू
प वि को न ला ४ म न्दा न धा र्ज प रू ४ उ क ल र्ज पु ना य मी ॥ ति व म ली पा पु य न ए का खी ला व का व
स ४ वं दा व का द नी व क नू र्ज जी व न्नि क य पि ॥ व स द नी कि न नू र्ज गु ड वी र्जि का मृ ता ॥ जी व
नि का श म व ली वि ष ल्या म धू प र्थ पि ॥ मृ र्वा द वी म धू न सा मा न म र्ज नी रू वा म धू लि का ध नू

२६

(गुणी) मा प र्थ पी ल प र्थ पि ॥ पा ण नू र्ज वि द्ध को र्ज का य नी ॥ प्र य सी न सा ए का खी ला पा य व ली ॥
प्रा वी ना व न नि कि का ॥ क रू ४ क रू रु ना ॥ क ना हि ली क रू ना हि ली ॥ म र्ज पि रु क रू रु दी व को गी
४ क ला द नी ॥ अ स गु का रू उ ध र्ज क रू रू ना पा व पा य ली ॥ म र्ज पा का रू क लि चि ४ क पि क रू
थ म र्ज टी ॥ वि ष म वि ष म् ॥ प्रा वी ड व नी र्ज व नी व मा ॥ पु रू ४ गु ली रू न ॥ गु ली न पु म र्जि क य र्थ पि
॥ अ पा मा र्ज ४ लो व नि का धा मा र्ज व म रू न को ॥ पु रू क य र्थ को म य र्थ कि लि ही व न म र्ज नी ॥ रू जि
का वा क नी प र्था रू र्ज वा क नी य र्थि का ॥ अ र्ज न व ली वा ल य ॥ क व र्ज व र्ज का ॥ र्ज नी का ॥
वि क सा र्जि नी र्म र्ज का ल म पि का ॥ म रू क य र्थ रू रू नी रू रू थ रू न व र्था पि ॥ या श य वा सा ड

स्युर्ध्वं, धनत्रयासः कनासकः॥ नादनीकः कुमानका, समूद्राका इनालका। पृथिव्यर्ण्यः पृथक् पृथक्
 श्री, विष्णुपथं विवसिका॥ काद्विनामिदं पृथक्, कनसिद्धावनिर्गुहा। निर्दिष्टिकास्य श्री शाब्दोः
 वदिगीकंठकात्रिका। पुत्रादनीकली इडा, दृश्यः नाद्विकल्पि। नीलीकाली, क्रीमिकीका, ग्रामी
 लाम्ब्यपथिका। नंजिनीश्वरुलाडुका, रूनीधालावनीलिनी। अंबलुगुः सोमनाथी, सूवल्लिः साम
 वसिका। कालमृषीकम्बुरुला, वाकवी पृथिव्यपि॥ कृष्णपकल्यावेदही, मागधीवपलाकला। उ
 षण्णपिप्यली। श्री, श्री, कालाथकविपिप्यली॥ कपिवल्ली कालवल्ली, अयसीवसिनः प्रमाना। चयंड
 वविकंकाक, विवीर्युंडुडुडुला॥ पलं कयात्रि दुर्गंधा, ध्वदं द्वास्वादकंठकः॥ गीकंठका। गीकंठ

का. वनं ४८ गच्छत्यपि विष्णुविष्णुनिविष्णु निविष्णुपविष्णुना ४८ गीतलोषधं वाथ. काना इ
 श्विक ४८ म॥ ४८ गच्छत्यपि विष्णुविष्णुनिविष्णु निविष्णुपविष्णुना ४८ गीतलोषधं वाथ. काना इ
 रुद्रनथपीनदु. कालयहनिद्रव ४८ दार्द्र्यपर्वपवादान् रुद्रिजपर्वनीत्यपि। तवाग्रगंधाषड्
 धा. (गालामी) गयर्विका ४८ काहेमवनीवेच. तारुर्निष्कोटुवाधका ॥ वधः ४८ नृषः ४८ सिंहास्या. वा
 सकावजिदकक ४८ गच्छत्यपि विष्णुविष्णुनिविष्णु निविष्णुपविष्णुना ४८ गीतलोषधं वाथ. काना इ
 लाकृकृनकना ४८ गच्छत्यपि विष्णुविष्णुनिविष्णु निविष्णुपविष्णुना ४८ गीतलोषधं वाथ. काना इ
 ४८ लूकृकृलीपुता। समकृ ४८ गच्छत्यपि विष्णुविष्णुनिविष्णु निविष्णुपविष्णुना ४८ गीतलोषधं वाथ. काना इ

नयं सकी। वलावायालकायं न, न वाडु ॥ १ ॥ यमि का। मृ दी का। ॥ २ ॥ रुनी डा का। लादी मधून सनि
 वा॥ सच्चैरुतिः सुवरा, विपुला विपुला विपुला॥ विरुंती नवनी धामा, पालिं श्री सुखलिका। काला
 मयूत्र विदला, डवंडा काल मयिका॥ मधूकं क्रीमकं यष्टि, मधूका मधू यष्टिका॥ विदानी की नधुके
 रु, गंधा का दुःख या सिना। अन्धा का न विदानी स्या, मरु ॥ ३ ॥ मरुं गंधिका। ली गली ॥ नदी माय, पिप्य
 ली ॥ कला दनी। खना ॥ का नवी दी ध्या, मयूना ला व मरु क ॥ ४ ॥ ॥ गायी ॥ मा सा नि वा स्या, दन का स्य
 ल सा नि वा। या ग्य मृ दि ॥ सिद्धि ल ॥ ५ ॥ वृद्ध न य्या द्र या ॥ ६ ॥ क दनी वा न व वृ सा, न रा मा र्वा ॥ ७ ॥
 रुला॥ का वी ला मू र्म य ॥ ८ ॥ का क मू मा स रु स्य पि। वार्त्ता का हिं गु ला शिं ली, रुं र को दू ॥ ९ ॥ य ध वि ली॥

30

ना कली स न सा ना स्या, स र्ग धा गंध ना कली। न कल षा डु र्ग मा क्री, रु शा की सु व रा व सा। वि दानि र्ग धा
 ॥ १ ॥ सु म नी, सा ल पे र्गि स्ति नो धु र्वा। डुं ठि कं नी स मू डा का, का र्पा सी व द नी शि व। रा न द्रा जी डु सा व न्याः
 ॥ २ ॥ ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

दीर्घकशास्त्र नाम च। कालानुसार्य वृद्धाभ्यः पूष्यभी न निवानडु॥ गेलयंगालपञ्चदश्यागंधक
 टीमना। गंधिनी गज रुकाडु, सवरासनरी नसा॥ मरुनसा कंदनूकी, सख की जादि नी निव। जग्निः
 कालासुरि क्रुडु भान की भाह पृथ्वी को। पृथ्वी का वटु बाले ला, निष्कृति चंद्र लक्ष्मी सा। स्रक्का पिकी
 चिकाडु का, काने गीति पृथ्वी टि॥ आधिः कर्क पानि राय, आध्या पा कल मृत्यु ल। गंधिनी धान प
 प्यी स्या, कलि न्यथ विडु न क॥ माठ मलामय गाली, निवान मल की निव। पृथ्वी उनी कं पोठय
 मथ डनः कर्वन क॥ डलिः कक॥ काल लका, नदी वृका धना कसी। वंडा धन रुनी क्रम दुष्य
 गुगल हास का॥ आशयूर्ध्व आसु नख, काने डी चक कान की। स्रधि ना विदु मल ना, कथानी धि

31

नदी नली॥ धर्म र्भजन कशी च, रुमूर्ध व विला सिनी। छुकि॥ र्भतः खनः काल, दली नख मथा ठः
 की। काका मृत्स्ना डुवलिका, मृत्काल के सना डुका। कटन टंड धपूनी, बालय पे विथ लवी। प्रवः
 गायन गानद के वली मृत्काल निव। ग्रंथि पृथ्वी के वरि, पूष्य स्त्री धय क कना। मन्माला डुपि
 पुना, पृक्का देवी लना लूयु॥ समुद्रा का वधू का टि, वराल का पिक स्यापि। नय सिनी ऊठानी सी ऊ
 टिला लान सामिषी। स्वर्ग र्भ स्रक टेरुंग, लवी वाच वनी गकी॥ कर्वन का रुविड विडु क॥ काल्यः
 का वध मृत्यु क॥ डापू (ध्या) जानि मा गुम्, नजा मो स र्व मो धर्मा॥ धा का स्त्री पञ्च पूष्यादि, गंडली आल्यम
 विष॥ विषया नि निर्यात का, रुलिनी धक पूष्यापि। स्रद कर्मा धा क गला, आविगी वृद्धा दान क॥ र्भग

५३

वाक्काउमत्याकी वयस्कासा मवसनी। पटपणी हेमवनी। स्वर्णकी नीहिमावनी। हयपूकी तुकाभा
 जी। मावयणी मकासका॥ उँठिकनी वकरुला। विविकापी लपथपि। वचनकवनी उँगी। खनयूया
 जगंधिका॥ उलापणी निसवला। नासायकनसावसा। वीगनी वृजिकादक॥ १०॥ मवका मलालिका
 ॥ सरुप्रवधी वृका म्। वनस॥ ११॥ नवधपि। नमस्कावी गणुकाली। समगा खदिविद्यपि। जीवनी
 जीवनी जीवा। जीवनी या मधुधसा। कूर्चणी र्मा मधुनक॥ १२॥ गडु र्मा जीवका॥ किना ननिका रु
 निम्बा। नार्थनिका थसफला। विसला भागला रुत्रि। रुता वर्मक धरुपि। वायसाली खादुवसा। व
 यस्का थ मूकलक॥ निकम्हा दकि। कायलक॥ १३॥ दम्बनयधपि। अजमादा रुग्रगंधी। वक्र

३२

दर्शयमानिका। मूलपूकनका। मीनपद्मपणालिपोकना। अंशुधामि वनापद्मा। वावर्गयधवावि
 ली॥ कं पिल॥ १४॥ कर्कशी वडा। नका। म्ना वावना र्थपि॥ पयना उल्लु उगगा। दद्रुधुधु कसर्दक॥ १५॥
 द्वाटडवला र्थधु। पलाइ दुसु र्कंदक॥ लता र्कंदु मोरु। रुत्रि र्थमलो मधु॥ वधुने गुरुक
 नाविधु मला कन्द वधानका॥ पुनर्न वाडु। भाधु। विडुने र्थनिस र्कंदी। म्ना दानक॥ १६॥ गला प
 नाजिगा। नयधपि। पाना वनां धि॥ १७॥ कटरी। विधु र्थानि म्नी लना। वार्धिकी गायना। म्ना। आयनी
 वलरुद्रिका। विधु र्थानि म्नी लना। वार्धिकी गायना। म्ना। आयनी
 वलरुद्रिका। विधु र्थानि म्नी लना। वार्धिकी गायना। म्ना। आयनी
 वलरुद्रिका। विधु र्थानि म्नी लना। वार्धिकी गायना। म्ना। आयनी

गस्यां कटं रुना नाऊ वला रुड वल निव ॥ ऊती ऊरु कान ऊती, ऊडु ऊच ऊव किं ना। सी स्य ॥ भाथ भाटी
गंध, मूली मगंधि क स्य पि ॥ कर्चु म पि प्य ला ॥ भा पि, कान वल ॥ कटि स्य क ॥ मूखे वा वाथ कल कं, प
टी ल स्यि क क ॥ प ॥ रु म्मा ॥ ऊ क म्मु क क्का न्, नि चो न् क क्का टी छि यो ॥ ०० का क ॥ कटु डु म्मी स्या न्, उ
च ला व न् रु स मी वि ज ग वा को ॥ म ड म्वा, वि भा ला वि ड वा न् ली ॥ ०० ॥ म्म ॥ सु न ल ॥ क क्का, गं डी न् रु स
म छि ला। कलं क्का या दि कां कु ड, मूल कं, छिल मा वि का। वा स्रू कं भा क रु दा ॥ स्य, द्वा डु ॥ न प छि का। स
रु प्र वी म्मो रु म्मो, नू लान का थ सा सि ता। गे ला मी ॥ न वी म्मो व, ग ॥ म्मो ली ॥ क लो क क ॥ क नू वि द्वा म य
ना मा, मूला मूला क म छि यो। स्या रु ड मूला का गु रु डा, दू ड ला व क ला च्छ टा ॥ वं ॥ म्मो व स्या न क म्मो व, ल वि

[illegible]

नाविकलमुलीगली॥ ध्यातुपूग॥ कमुका, गुवाक॥ खपूनासाड। हलमुधगभनव, हिनालसहिना
 कुय॥ खहुनि॥ कनेकीगली, खहुनीवरुणदुमा॥ **अजिननोषधिवर्ग**॥ ॥ सिंहासुगनु॥ ये
 वासा, रुम्यक॥ के॥ नीरुनि॥ भादूलहीविनोयाधु, ननकुमुनगादन॥ वनाह॥ कनादुहि॥ का
 ल॥ भागीकिविकिठि॥ दकुयालीसभाभासा, काधीरुदानरुपि। कवि॥ पुर्वग॥ पुवग, भाखान
 गवलीसूवा॥ मर्कटावानन॥ की॥ वनोकाअथरुलूक। मकाकरुसुरासका, मकुंरुवकुव
 जिनी। ललापामहिषावाह, द्विषकासननेनिगा॥ शिर्षाशिवाहनिमाय, ममायमगधरुका॥
 सुगालवैवकाह, रुनुरुनवजवका॥ अडुविजालामार्जना, वसद॥ कआखडुक॥ जथा। गो

३४

धनगोधन, गोधया। गोधिकात्मक। अविनडुगल्यसुखास्त्रि, भलली। भलली॥ वानपुमीर्वात
 नृग॥ काकरीहामृ। गवक॥ नृगेकनगवोनाय, रुविलाजिनयानय॥ जे। लयम। अथर्मायः
 मलस्ये। मरुतिवृ। कदलीकंदलीवीन। समूत्र। अजिहनिना, अमीअजिनयानय॥ कपूसानव
 नृयंक, नैक॥ धननोहिमा॥ गकधूपसेनय, नाहिना। अमनामृगा॥ मधर्व॥ नहावात॥ सु
 मनागय॥ म॥ ॥ रुखादथासु। गदुया, गवाया॥ पधुजातय॥ डं। दूरस्मृषिकायाव, मित्रिक
 कालसुविका। कुरुंदनीगंधमूषी, दीर्घमुंदादिवांधिका। शनट॥ ककलास॥ स्या, मूरलीगुरु
 गाधिका। लुगाश्रीननुवाथार्क, नारुमर्कटका॥ समा॥ नीलागुमुकमि॥ कर्क, जलोका॥ नय

[illegible]

लकं ० क १॥ आनायिवि सो दा का य्य गृधोकी व १३ को स मो क दू को वा थ व क ४ क द ४ पृक्क ना दू दुः
 सान स १॥ का क १३ क १३ क वा का न १३ ग १३ य ना म क १॥ का द व १ क ल द स १३ स्या दू को १३ क न मो स मो
 दं सा मु १३ न ग नू ३ ध का ग मा न लो क स १॥ ना ऊ दं सा मु न वं व व न १३ लो दि न १३ शि ना १॥ म लि ने
 म लि का र्वा १३ ध र्क ना दू १३ शि न न ने १३ ना वि ना टि ना डि ध व ला का वि स र्क नि का १३ दं स स्य था
 वि द न द सान स स्य डु ल क्र १॥ ऊ डु का जि न य ज स्या त्य ना धू न ले पा यि का १३ य र्व १३ म क्रि का नी
 ला स न ध्या म धू म क्रि का १३ य र्ग नि का यू रि का स्या दं १३ मु व न म क्रि का ॥ दं १३ न का नि न ल्या स्या न न १३ धा
 ली व न टा दू य १॥ रं ग ना मी नू का वी नी मि लि का व स मा न् मा ॥ स मो य र्ग न १३ ल ली त्व धा मो १३ नि वि

गल॥ मधुवृक्षमधुवृक्ष, मधुविद्यधुपालिन॥ द्वित्रयधुपालिहृग, मधुदधुममालय॥ मधुनाव
 हि॥ वरु, नीलक॥ ०॥ तुङ्गमकु, शिखावल॥ शिखाकका, मधुनादानलास्यपि॥ ककावाणीमयः
 नम, समीवृद्धकमवको॥ शिखावेठाशिखीठमु, पिकवर्द्धनयंसक॥ त्वगविहृगविहृग, विहृग
 मविहृगयस॥ ०॥ कनिपक्रि॥ कनि, कनक॥ कनदिजा॥ पनशिपनिपनग, पनत्यननथाठजा॥
 न॥ गोकावाजिविकिन, विविचिनपनय॥ नीनाकुवागनत्तक॥ पिककानरुसंगमा॥ गयीवि॥
 वाकावीगा, मधु॥ कानवृद्धयव॥ निहिनि॥ ककुलावा, जीवजीवकावक॥ कायविकदिहिरु
 का, वर्द्धकावर्द्धकादय॥ गनत्यककदा॥ पन, पनवृद्धननवृद्धी॥ मीपक्रि॥ पक्रमूल, ववृद्धादि

३३

वृद्धिथो॥ पठिनाडुनसंठीना, न्यना॥ त्वगगनिजिया॥ यणीकाधादिहीनपुं, कलाथानीउमलि
 यो॥ पान॥ पाकारुकाठिरु॥ पथक॥ वक॥ शिषु॥ लीप्रीमिथूनद्वंद्व, यमपुयगलयगी॥ स
 मृदुनिवदयूरु, सदाहविसनवृजा॥ कामीयनिकनवान, वानसंयागसंवया॥ समुदाय॥ सम
 दय॥ सनवायप्रथागल॥ श्रियाडुसंहनिर्वन्द, निकनवकदवकी॥ वृद्धकदा॥ सभेवर्द्धन॥ सद्य
 सा॥ श्रीतुङ्गमु, रि॥ सजानीये॥ कल्यर्थ, निनथीप्रीनयंसक॥ पधुनीसमआभवा, समाजा॥
 सधर्मिणी॥ स्यानिकाय॥ पूजवाणी, कृकन॥ कटमश्रियो॥ काधान॥ कसायून, गहिनादीनिन
 म॥ गृहासका॥ पक्रिहृग, कृकारुगृककाधन॥ गुनिर्विहादिवर्द्धन॥ ॥ मनुष्यामान

[illegible]

५ भा व ६

[illegible]

गाडवीनसू॥ जगपुण्यापुजागाव, पुस्तगावपुस्तिका॥ छीननिकाकाठवीर्या, दूनीसंवात्रिकस
 भाकासायनकडकडाया, कामायवसनोधवा। शंभुधोपनवधमस्तु, स्ववशागिल्यकात्रिका॥ अ
 सिक्कीस्यावकडाया, पुण्यान॥ पुनवात्रिणी। वानमुगलिकावध्या, न्याजीवाधमाजन॥ सगक
 गावालमूल्यास्या, कदनीरुलीसमा। विपुत्रिकात्रीकलिका, देवक्रोधनजसुला॥ छीधमि
 धवीनगुथी, मालिनीपूषावस्यपि। मडुमस्यपदकापि, स्याउज॥ पुष्यमार्कवी॥ छीनवृद्ध
 रुदवनी, निष्कलाविगनार्कवा॥ अथनरसत्यास्यामुचि, धनक्यतीवगर्हिणी। गलिकाधमुग
 लिर्क, गलिलिथोवननग॥ पुनहुदिधिवृद्धा, दिसस्यादिधिवृ॥ यनि॥ सडुदिजाप्रविधिवृ

३८

१. सेवयस्यकटविनी। कानीन॥ कन्यकाजग॥ सुगाथसुगसुग॥ सोरानिनय॥ स्यास्यान, मु
 यमुपनक्रिया॥ येरुचयय॥ स्यालोह, स्वमीयधुपिरुचसु॥ सुगामाहवसु॥ धेवी, वेमारुथा
 विमारुज॥ अथवीधकिनेय॥ स्या, दंधलधारातीसुग॥ कोलठय॥ कोलठना, हिङ्कीडसनीय
 दि॥ नदाकोलठिनयास्या॥ कोलठयापिवात्मज॥ अत्तजहनय॥ सन॥ सग॥ पुग॥ क्रियत्त
 मी॥ अहुद्दिहिननसर्व, २पत्येनाकंतथा॥ सम। स्वजान्तीनसावस्यो, तातकुजनक॥ पिता। क
 नयीगीपुस्तमोना, जननीरुगनीसुसा। ननदाडुचसापत्य, नहुधोणीसुगात्मजी। रायाडुडा
 रुवग्नस्य, यातन॥ स॥ पुनस्यनी॥ सजावतीरुजाया, माडुलानीडुमाडुला। पुनिपत्यस्या॥ ५

सु० व० १०८ ॥ व० व० न० दु० पि० ता० ग० था० ॥ वि० रु० ज० ना० वि० रु० वा० ॥ स्या० ॥ आ० रु० ज० ना० दु० मा० दु० ल० ॥ स्या० ला० स्य० उ० म० न०
 १० य० ला० ॥ स्वा० मि० ना० द० व० द० व० नो० ॥ स्व० धी० या० रा० नि० न० १० य० ॥ स्या० ॥ ज्ञा० मा० ना० द० हि० दु० प० नि० ॥ पि० ना० म० रु० ॥ वि० रु० पि०
 ना० न० मि० ता० पु० पि० ना० म० रु० ॥ मा० दु० म० ना० म० रु० थ० व० ॥ स० पि० धी० मु० स० ना० रु० य० ॥ स० मा० ना० द० म्य० सा० द० म्य० ॥ स० ग०
 र्य० स० रु० जा० १० स० मा० ॥ स० (मा०) ग० वा० भ० व० रु० नि० ॥ व० धू० स्व० स्व० ज० ना० १० स० मा० ॥ क्रा० म० य० व० धू० ना० म० वा० ॥ ज० मा० रु० व०
 स० म० रु० या० १० भ० व० ॥ प्रि० य० १० प० नि० रु० रु० ॥ ज्ञा० न० रु० प० य० नि० १० स० मा० ॥ ज्ञ० म० ग० ज्ञा० न० रु० १० क० ॥ म० रु० रु० रु० नि० (मा०)
 ल० क० ॥ मा० ना० पि० ना० पि० ना० ॥ मा० न० व० पि० ना० व० ना० ॥ व० धू० व० धू० व० धू० व० ॥ व० धू० व० धू० व० धू० व० ॥ द० य० नी०
 ज० य० नी० रु० म्य० ॥ प० नी० ज्ञा० या० प० नी० व० नो० ॥ ग० रु० १० था० ज० ना० य० १० स्या० ॥ दु० ल्ब० च० क० ल० ला० छि० यी० ॥ सु० नि० मा० सा० वे० ज०

३९

न० मा० ग० रु० रु० १० म० स० मा० ॥ रु० नी० य० य० रु० नि० १० १० ३० ॥ क्रा० व० प० थ० न० प० स० क० ॥ मि० धू० व० ॥ व० व० वा० ल्य० ना० न०
 १० यो० व० न० स० मा० ॥ स्या० रु० वि० न० रु० व० रु० व० ॥ व० रु० व० पि० च० व० रु० क० ॥ प० लि० ग० ज० न० सा० ॥ क्रा० क० ॥ क० ॥ क० ॥ वि०
 धू० स० ज० ना० ॥ स्या० दु० क० ना० य० या० रु० रु० ॥ रु० न० या० व० रु० न० रु० यी० ॥ वा० ल० रु० स्या० ना० न० व० का० ॥ व० य० रु० रु० रु० व० ॥
 य० वा० ॥ प० व० य० १० रु० वि० ना० व० रु० ॥ जी० ना० जी० ॥ रु० ज० व० न० पि० ॥ व० र्मा० या० रु० ॥ म० सी० का० या० ॥ रु० व० ज० रु० रु० वि० या० ग०
 रु० ॥ ज० य० न्य० रु० रु० १० क० नि० रु० ॥ य० वी० या० व० न० ज्ञा० न० रु० ॥ ज० र्मा० सा० दु० व० ल० रु० ॥ व० ल० वा० म० सी० ल० ॥
 रु० ल० ॥ उ० दि० ल० रु० दि० क० रु० दी० ॥ व० रु० न० क० रु० ॥ वि० वि० ॥ रु० ल० ॥ अ० व० नी० ना० रु० ना० रु० ॥ व० रु० ना० न० रु० ना०
 सि० का० ॥ क० ॥ व० १० क० ॥ रु० क० १० क० ॥ व० लि० ना० व० लि० रु० १० स० मा० ॥ वि० क० ली० ग० रु० या० ग० रु० ॥ व० रु० रु० रु० रु०

[illegible][illegible]

[illegible]

विष्ठाविष्ठाभियो॥ स्यात्कर्मनः कया लाशु की कर्म कल्पमस्ति वा। स्यात्कनीनाम्नि के कालः प
 क्षीर्द्धिं तु कः। नृका। शिवास्तनिकनाटिः मु। यावत्स्ति निदुपार्थुका॥ अर्ग्यनी का वयवा पद्यता
 थकनवलं। गगनवयः संरुननं, ४। नीनं वषा विग्रहः। कायादहः। की वयं भाः। क्रियां मूर्द्धि
 नृकनृ॥ यदाग्र्यपदं यदादः, पदेद्युष्टन॥ भ्रिया। नृं धी द्यटिक गुल्मे, यमात्मा ध्वि व ध
 स्तथा॥ अर्ध्यादुष्टना जानू, नृपभाषा वद क्रिया॥ सकि, की वयमानू, नृत्तं वि॥ यं शिवं कल
 ४॥ पुर्द्धिं पानं यायुर्त्तं वलि नृत्तं नृध्या॥ कदा ना॥ प्रालि रूलकं कटिः॥ प्रालिः ककदमी॥
 पश्चानि नृत्तः मु। कद्याः, की वदुज्जयनं वृत्तः। कयको दुनि नृत्तः, दयदीनक कंदन। क्रियां

हि चो कटि अथा, वयस्का वक्रमालयाः। रुग्णानि द्विधाः। लिङ्गम्, मृदा मरुतः। शरुसी। मूका। पुकाः।
 धावपलः। एष वंशधनिकः॥ चिचिं ड के को ज ० मा, दने ड के को कथो। वृवकं ड क व प्रस्था, न
 नाका ठं डु जा कर्न॥ उ ना व सी व व क थ, एषं डु व न म न नाः। स्कं (धा डु ड लि ना मु, मं श्री न स्ये व
 ऊ ऊणी। बाहु मू नो ल ड हो क को, पार्थ म मु ग या न धः॥ म ध म वा व ल ग्नी व, म (धा मु क्षी य नोः
 द्वायाः॥ डु ज वा कृ य व क्षा कोः, स्यात्क हा लि मु क र्प्य नः॥ अस्या य नि प्र ग पुः स्या, लु का क र स्य द
 वा य धः। म लि वं धा दा क नि षं, क न स्य क न रा व दिः॥ यं व क्षा खः। यः पालि, रु र्ज नी स्या, लु द
 णिनी॥ अं गु ल्यः क न म्। खाः स्यः, यं स्यं गु षः। पु द णिनी। म ध म ना मि का वा पि, क मि षा य नि ताः

४२

क मा न॥ पु न र्हु वः क न नू हा, न खा मु न ख न्ना भि यो। पा द ण ग ल (मा क र्ण, रु र्ज न्या दि मू ग न्ना। अं
 गु ष से क नि ष स्या, दि ग लि च्छा द ण गु लः। पा लो व य ट पु न ल, पु द सा वि रु गी गु लो। क्षी र्म ह मो र्म
 रु न ल, पु न लो वा म द क्रि लो। पालि नि क ड्डः। पु र्ग, लो य गा र्वा ड लिः। य मा नो॥ ए का क्वा वि रु ग क
 ना, रु र्ज मू षा डु व द्वा। स न त्रिः स्या द न त्रिः। मु तिः। कि नि ष न म्। दि ना॥ यो मा वा द्वाः। स क न था
 रु न था। लि र्ग न क र्ने। डु र्द वि रु ग दाः। पालि, नू मा ल यो व र्प जि व्। कं (ध ग ला थ ग्री वा यो, णि ना धिः
 की ध न स्य पि॥ क म्। ग्री वा जि न्ना वा सा, व द्वा यो ट क्का टि का। व का स्य व द नं डु ड, मा न नं ल प नं म्
 र्वी॥ क्वा व द्वा र्ण मं ध व हा, धा ल ना सा व ना मि का। अ षा ध नो ड ल द न, क दो द ण न वा स सी। अ धः

स्थात्रिवर्कंगअ कपालोतस्यनारु॥ नदनादनादना नदालालुकाकदं प्रसन्नानसना
 जिह्वा प्रोक्तावाक्यस्य कला ललाटमलिकं गंधि नृक्षदं न्यात्रुवोभियो कर्चमशुत्रुवाम्भक्ष
 गानकाकु॥ कतीनिका॥ लावनननयननन मीकलीवकुनक्रिणी ददृशीवाश्रुनगम्भ मोदन
 वधमश्रुवा जूयां मोनयथानको कटाक्षायामदलने कर्षणकग्रहो (गुणं) श्रुति॥ कुशुवर्ण
 ७व॥ डरुर्मा गीतिन॥ १०॥ मूर्च्छनामस्तकाभिर्या विद्वन्॥ कनकलावाल॥ कव॥ क॥ १॥ मित्रा
 ६॥ नदृन्दकेलिकं कथं मलकोधुर्ककला॥ गललाटुमनका॥ काकयक॥ शिवपुत्र॥
 कवनीक॥ १॥ १॥ धर्मिल॥ सयना॥ कवा॥ शिवचूडाक॥ वाणी वनिनमुष्टाजयव

४३

लि॥ यवली गार्भ॥ लिनस्योविषदकवापा॥ यकृष्टरुष्ट कलापार्थ॥ कवायन॥ ननृदृ
 नामलाम नदृक्षो॥ मश्रुयं मूत्रा आकल्यव (भोनपथं) यतिकर्मप्रसाधनं॥ दलोमिष्टलंक
 र्ण लंकनिष्कृष्टमपुन॥ प्रसाधिगालं कनध्व रुषितप्रपनिस्कन॥ विजुडुजिपूत्राविष्कृ रूपाकु
 स्रोदलं किया अलंका नत्वा रुनर्ण येनिकावा विरूषली॥ मपुलं वाध केनेट किनीटैयनये सेकैव
 असलि॥ मित्रा नत्ने नलोहनमथग॥ बालवाध्यापानिगथा पशुवाध्या ललाटिका कर्षिका गाल
 यर्गस्या कउलंक प्रवदने॥ गेवयकं क० रुषा लवनस्याललनिका॥ स्वर्ण॥ १॥ पालविका
 १॥ न॥ स्तुतिकामोकि केके॥ १॥ रात्रामूकावलीदव कंदामोहनयेष्टिका रात्ररुदा रुष्टिरुदा रु

कउछाई (गलना) अर्द्धाभा माणवक ७ कावलय कय छिका। सेवन करुमालाया, सफविं भावि
 मोकि के ॥ अवापक ॥ पालिहार्य ॥ कटकी वल या छिया। कयून मेरु देतु अ, अगुली यक मू मिक
 । साकना गुलि मूडाया, किकर्ण कन रूषर्ण। फोक घां मखला कांवी, सफकी न सना तथा। को वसा
 न सन वाध, पंख घां मखल छिया। पादा रु देतु ला काठि, मजी ना रूप ना छिया। र्द स क ॥ पाद कट
 क ॥ किं किणी कुद यं टिका। त्रु ले क मिना मालि, वसु या नि द्द ॥ छिया। वा ली को मा दिखाले उ, का
 प्य सं वा द न व न। को धर्य क मि को ॥ भा क, नीक वं न ग ना म र्ज। अना द न ति सुवालि, नै उ क व
 न वा व न। ग ल्हा इ रु म ती र्य य, को र्था वं नु थार्य ग म ॥ य शर्ध, धो न को ॥ र्य, व रु म ल्य म दा व न

४४

। को मंद कूल स्या द्दु, निवी नीजा वने छिया। छिया वरु व व रु स, द ॥ १ ॥ सूर्य सु था द्द था ॥ दे र्पो मा याम
 अना रु ॥ य नि म को वि भाल ना। पठ च न जी र्ध व रु, स मो न क क क य ॥ व रु मा का द न वा स। ध
 ल व स न मं रु के। स खल क ॥ य र्था ली स्या, द्द ना लि ॥ लु ल ॥ ट क ॥ नि धाल ॥ स क द प ॥ स मो न ल
 क क व ली। अ क नी था प र्म यान, य नि धाना न्ध ॥ धी के ॥ दो पा वा ना रु ना र्ज। स, स मो व रु मि का न था
 । र्ज यान म रु नी र्य व, थाल ॥ क र्म श क ॥ छिया ॥ ती सा न रु पा व न ॥ दि ता नि ले नि वा न ॥ अ र्द्ध
 व रु व न रु ली। स्या च्चं र्ज न क र्म रु के। स्या छि स्या पु प दी न, ग ल्हा धा स्या पु प द दि य न ॥ अ रु वि ना
 न म स्या वा, द्द यार्थ व रु व ॥ म ति। य नि सो ना रु व नि का, स्या छि न रु क नि ली व सा ॥ य नि के म्म ग र्म र्का

न० १४॥ स्यात्सार्द्धमार्द्धनामृता॥ उदरुनाकादतदं सप्तश्राव्यावश्राव्यव॥ स्यात्तव चोदुवाचिकं रु
 मकाथयवाधने॥ अनुवाध॥ यगलेखा, यगुलिनिमसमे। नमालयगुलिलक, विगुकापि वि०
 मर्क॥ दिनीयवदुगीयव, ननुआमथर्कं कर्त॥ कर्मीनऊन्मागिहितवनवाङ्गीकयीनर्त॥ नक
 र्ककावपिपुर्त, धीनभाहितवेदन॥ लाकावाकाऊडुपुव, यावाकाडुमासय॥ लवर्गदवक ४७
 र्मर्त, श्रीसंरूपमथयावर्क। कालीयर्कवकालान्, सार्थवाधसमार्थर्क। वैशिंकापुननाऊर्द, शारु
 किमिऊऊगर्क। कालागुर्वगुन॥ स्यात्, र्मगलासहिर्गधियन। यकधूप॥ यर्कनसा, नालसच
 नसावपि॥ वदुनपाप्यधवक, धूपकडिमधूपको॥ इन्क० विठक० सिका, यावनायधपोय

४७॥ स्यात्तवानपपुन० कवि०॥ धूधीमानसुनि० कर्मीकृष्टि, स्रवव॥ विवकृण॥ दूनदभी
 दीर्घदभी, ॥ १॥ रिय० कान्दसोसमो॥ डयाध्याथोधापक० स्यात्, स्यान्निषकादिकुदावार्थ, श्रद
 दान्वधनवगी॥ यकवयऊमानोप, ससासवतिदीक्रिग॥ ५०॥ का० लायायइका, यकाडुविधि
 नकवान॥ रगीप्यनिद्यांरूपनि०, सामपीनीडुसासप॥ सर्ववदा० सयनक्ष, याग० सर्वस्वदकि
 १॥ अनुवा० युववन, रोगधीनीपुनामुय॥ लवान०० ससावक, सत्तास्त्रिषवक॥ का
 गकवासिनोमिषा, ॥ १॥ व्या० पाथसकलिका॥ ७०॥ कवुकुवगावाना, मिध० सवुकवानि०॥ स
 तीध्या॥ श्रेकडुनव, श्रिगवाननिमनिविग॥ पार्नयर्थोपद॥ १॥ स्या, देनिमनिनिहावय॥ डपक

क्लाः न ता मं श्या क्ला न रं रु ड प क म ॥ य रु १ स वा थ मा ग या १ स क रं रु म् त्व १ क रु १ या वा क्ला म
 ध्या नि धा तां स प यो न प्यं व लि ॥ ७ ॥ रं व स दाय क्ला उ क्त य क्क दि ना म का ॥ स न क्का प नि स क्का
 क्का स ला स नि नि स प द ॥ अ क्का ती क्का व अ क्का न ली न र्प स क था स द ॥ अ र्ग्वं १ १ प र्ग्व वि र्ग ल स
 द स्या वि भि द लि न ॥ स र स द १ स र स क्का ना १ स र १ स मा जि का ध्व न ॥ अ र्ध र्थ क्का रु क्का ना मा य रु १
 स मा र्गि द १ क्का मा त ॥ अ र्ग्वो ध्या ध ने क्का र्थो ज त्वि क्का या व का ध्व न ॥ व दि १ प नि क्का ना रु मि १ स म र्क ठि
 ल व त्व न ॥ व षा लो य प क १ क्का वा स ग रु न व नि १ य पा र्थ न र्म नि र्म ध्वा ना न लि त्व न लि द्वा १ द
 क्का लान्ति १ स ला प य रु व ती यो रु या न य ॥ अ र्ग्वि रु य नि र्द रु ना व ली न १ र्ग्व क्का ना न ल ॥ स म र्क

योयथल्लिङ्गि ॥ ३ ॥ यस्यार्द्धं स्थावरा मनु सधनो न स कर्मलं ॥ ज्ञानपूर्वो भुवि वा व स निपाटी जन्तु क
 म ॥ यमो यश्चानिमानु स्यात्सम्यय उपास्य ॥ नियमावत स मुनिश्च यवासादियुधकी ॥ उपक
 र्त्तु यवासा विवकः पृथगस्तना ॥ सावकवर्चसं वला ॥ यमनं दिनार्थं जलि ॥ पा ॥ उक्तां जलि
 पा ॥ विपुष्पावक विन्दवः ॥ यमनार्थं सनेव क्ता ॥ सनेक लय विधि कर्म ॥ नृत्यः स्यात्पुष्पमः क ल्या
 जन्तु क ल्या मनु ॥ यमः ॥ सैकान् यवर्चं गुरुणी स्याद् यानर्णं ॥ सनेव यवर्चं गुरुणी सनेव यवर्चं गुरुणी सनेव यवर्चं गुरुणी
 ॥ लिङ्गः यत्रिवा कर्मदी ॥ यानाः यमि सस्त्री ॥ यवस्त्री नाय सः यानि की क्रीवा वं यमो नृनि ॥ यम
 ॥ कर्म सहा दामा ॥ वर्द्धिताव क्तवानि ॥ यमयः सस्य वव सः ॥ स्नान कल्याणु नवनी ॥ यनि किं नृदि

[illegible][illegible]

नमः ॥ मूर्द्धाहिरिकानाकन्या, वाङ्मयः कथितविनाट, नाटिकाटपार्थिवः आरु, नृपयुय
 महीकिनः ॥ नाकाकुपणना, सासकः सादधीधनः ॥ वकेवलीसावेमोभा, नृपाधोमंडनधन
 ॥ येनद्वेनाकसूथन, मण्डलस्यधनधनयः ॥ मलियध्रका नाकः, सप्तमाठधनाकः ॥ ना
 कयकंवटपति, कथितार्थगणकमान् ॥ मंगीधसुविवासाया, अकर्मसुविवरुनः ॥ मरुमाः
 ॥ प्रधानानि, पूनाधामुपूनादिनः ॥ उद्विचवदानार्थ, पादिवाकाकदधीको, पुनीदानधनः
 पाल, दासकदासिनदधीकाः ॥ नक्रिवर्गत्वनीकका, इथाधकाधिकमोसमो ॥ स्थायकाधिकमो
 ग्राम, (मापाग्राम) वृत्तिवृत्तिनिकः कनकोधका, नृपाधकाकदधीको ॥ अकः पूनत्वविकनः

७०

स्यादकर्वसिकाजनः ॥ शोविदसाः कवूकिनः, स्थायसाः शोविदाधनः ॥ वंशवर्षनमुल्याः, सवका
 धनः ॥ विषयाननकनाका, लरुमिहमनः ॥ उदासीनः यनननः, पाकिग्राहमुकन
 ॥ निधोवेनिसयलानि, द्विषद्वमलद्वद्वदः ॥ द्विद्विपकादिनामिह, दस्यधनवधनवधः ॥ अलिघा
 निसनानि, पुनर्थिधनियधिनः ॥ वयस्यमिनिधः सवया, अथमिहसवस्यद्वनः ॥ सव्यसा
 कयदीनसा, दननाधनवर्धनः ॥ यथाद्ववर्धः पुलिधि, नयसव्यधनः ससः ॥ वानेधनवर्धन
 धनः ॥ पुनर्थिधनवर्धनः ॥ सान्वस्यनाधनमिका, देवकगणकावयो, सर्मोद्वर्धकमोद्वर्धक
 निकारुत्तिकाधनः ॥ गीतिकाधनसिद्धाकः, सगीगृहयनिः सर्मो, लिपिकनाकववधन, कनव

[illegible]